श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

श्रीमद्भगवद्गीता

पार्थ सारथी ने समझाया धर्म -कर्म का ज्ञान,
मानव जीवन सफल बना ले गीता अमृत मान।

नारायणं(न्) नमस्कृत्य, नरं(ञ्) चैव नरोत्तमम्।
देवीं(म्) सरस्वतीं(वँ) व्यासं(न्), ततो जयमुदीरयेत्

नामसङ्कीर्तनं(यँ) यस्य, सर्वपापप्रणाशनम्।
प्रणामो दुःखशमनस्, तं(न्) नमामि हरिं(म्) परम्

अथ ध्यानम्

कृष्णं(न्) नारायणं(वँ) वन्दे, कृष्णं(वँ) वन्दे व्रजप्रियम्।
कृष्णं(न्) द्वैपायनं(वँ) वन्दे, कृष्णं(वँ) वन्दे पृथासुतम् ॥ 1॥

अर्थात् कृष्ण ही नारायण भगवान् हैं। कृष्ण ही व्रजप्रिय,कृष्ण ही द्वैपायन व्यास हैं और कृष्ण ही अर्जुन हैं।

सच्चिदानंद रूपाय, विश्वोत्पत्यादिहेतवे।
तापत्रय विनाशाय, श्रीकृष्णाय वयं(न्) नुमः ॥ 2॥

सच्चिदानंदस्वरुप भगवान श्रीकृष्ण को हम नमस्कार करते हैं, जो इस जगत की उत्पत्ति, स्थिति, और विनाश के लिए उत्तरदायी हैं। वे आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक- तीनों प्रकार के तापों का नाश करने वाले हैं।

शान्ताकारं(म्) भुजगशयनं(म्), पद्मनाभं(म्) सुरेशं(वँ),
विश्वाधारं(ङ्) गगनसदृशं(म्), मेघवर्णं(म्) शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं(ङ्) कमलनयनं(यँ), योगिभिर्ध्यानगम्यं(वँ),
वन्दे विष्णुं(म्) भवभयहरं(म्), सर्वलोकैकनाथम् ॥ 3॥

जिनकी आकृति अतिशय शांत है, जो शेषनाग की शैया पर शयन किए हुए हैं, जिनकी नाभि में कमल है , जो देवताओं के भी ईश्वर हैं, संपूर्ण जगत के आधार हैं, जो आकाश के सदृश सर्वत्र व्याप्त हैं, नील मेघ के समान जिनका वर्ण है, अतिशय सुंदर जिनके संपूर्ण अंग है, जो योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किए जाते हैं, जो संपूर्ण लोकों के स्वामी हैं, जो जन्म मरण रूपी भय का नाश करने वाले हैं, ऐसे लक्ष्मीपति कमल नेत्र भगवान श्री विष्णु को मैं प्रणाम करता हूं

यं(म्) ब्रह्मा वरुणेन्द्ररुद्रमरुतः(स्) स्तुन्वन्ति दिव्यैः(स्) स्तवैर्-

वेदैः(स्) साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं(म्) सामगाः।

ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं(यँ) योगिनो-

यस्यान्तं(न्) न विदुः(स्) सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥ 4॥

ब्रह्मा,वरुण,इंद्र रुद्र और मरुद्गण दिव्य स्तोत्रों द्वारा जिनकी स्तुति करते हैं,सामवेद के गाने वाले अंग, पद, क्रम और उपनिषदों के सहित वेदों द्वारा जिनका गान करते हैं, योगीजन ध्यान में स्थित तद्गत हुए मन से जिनके दर्शन करते हैं,देवता और असुर गण जिनके अंत को नहीं जानते,उन परम पुरुष नारायण देव के लिए मेरा नमस्कार है

भीष्मद्रोणतटा जयद्रथजला गान्धारनीलोत्पला,

शल्यग्राहवती कृपेण वहनी कर्णेन वेलाकुला ।

अश्वत्थामविकर्णघोरमकरा दुर्योधनावर्तिनी,

सोत्तीर्णा खलु पाण्डवै रणनदी कैवर्तकः(ख्) केशवः ॥ 5॥

भीष्म और द्रोण जिसके दो तट है, जयद्रथ जिसका जल है, शकुनि ही जिसमें नीलकमल है,शल्य जलचर ग्राह (मगर) है, कर्ण तथा कृपाचार्य ने जिसकी मर्यादा को आकुल कर डाला है,अश्वत्थामा और विकर्ण भी जिस के घोर मगर हैं,दुर्योधन रूपी भंवर से युक्त ऐसी भयंकर रणनदी को केवल श्रीकृष्ण रूपी नाविक की सहायता से पाण्डव पार कर गये ।

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कं(म्)सचाणूरमर्दनम् ।

देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(वँ) वन्दे जगद्गुरुम् ॥ 6॥

कंस और चाणूर का वध करने वाले देवकी के आनंद वर्धन, वसुदेव नंदन, जगतगुरु श्री कृष्ण चंद्र की मैं वंदना करता हूं।

प्रपन्नपारिजाताय, तोत्रवेत्रैकपाणये ।

ज्ञानमुद्राय कृष्णाय, गीतामृतदुहे नमः ॥ 7॥

श्री कृष्ण को नमस्कार, जो इच्छापूर्ति करने वाले वृक्ष के समान हैं। वे अपनी छड़ी से पथभ्रष्ट हुए भक्तों को मार्गदर्शित करते हैं, गहन ज्ञान के प्रतीक हैं, तथा उन्होंने हमें गीता का बहुमूल्य अमृत दिया है।

मूकं(ङ्) करोति वाचालं(म्), पङ्गुं(लँ) लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं(वँ) वन्दे, परमानन्दमाधवम् ॥ 8॥

मैं भक्तिपूर्वक कृष्ण की दिव्य कृपा का स्मरण करता हूं जो ऐसा कर सकती है गूंगे वाक्पटुता के साथ बोलते हैं और पंगु व्यक्ति पर्वतो को पार कर जाते है, मैं उस कृपा को याद करता हूं और उसका गुणगान करता हूं जो माधव की सर्वोच्च आनंद अभिव्यक्ति से बहती है।

अथ श्रीमद्भगवद्गीतामाहात्म्यम्

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां(म्) भगवता नारायणेन स्वयं(वँ),
व्यासेन ग्रथितां(म्) पुराणमुनिना मध्ये महाभारतम् ।
अद्वैतामृतवर्षिणीं(म्) भगवतीमष्टादशाध्यायिनी-
मम्ब त्वामनुसन्दधामि भगवद् गीते भवद्वेषिणीम् ॥ 1॥

हे भगवद्गीता,जिसे स्वयं भगवान नारायण ने पार्थ को प्रकाशित किया था,तथा जिसकी रचना महाभारत में प्राचीन ऋषि व्यास ने की थी, हे दिव्य माता,पुनर्जन्म का नाश करने वाली,अद्वैत रूपी अमृत की वर्षा करने वाली तथा अठारह अध्यायों से युक्त, हे गीता, हे स्नेहमयी माता, मैं आपका ध्यान करता हूँ!

पाराशर्यवचः(स्) सरोजममलं(ङ्) गीतार्थगन्धोत्कटं(न्),
नानाख्यानककेसरं(म्) हरिकथा- सम्बोधनाबोधितम् ।
लोके सज्जनषट्पदैरहरहः(फ्) पेपीयमानं(म्) मुदा,
भूयाद्भारतपङ्कजं(ङ्) कलिमल- प्रध्वं(म्)सिनः(श्) श्रेयसे ॥ 2॥

पराशर ऋषि के पुत्र वेद व्यास जी के मुख से निकली हुई यह वाणी, उस मलरहित कमल पुष्प के समान है, जो गीता के सार्थक अर्थ रूपी सुगंध के कारण अत्यंत प्रभावशाली तथा तेजस्वी हो गई है। भगवद् गीता में भगवान के विभिन्न आख्यानों की तुलना कमल पुष्प के तंतुओं से की गई है। श्रीमद्भगवद्गीता श्री हरि की विभिन्न कथाओं एवं प्रदत्त शिक्षा के फलस्वरूप जीवंत प्रतीत होती है। सज्जन पुरुष को भंवरे की उपमा दी गई है जो प्रतिदिन इस कमल पुष्प का रस पीकर मुदित होते हैं। यह पंचम वेद महाभारत भी कमल पुष्प के समान है, जो कलियुग के समस्त पापों का हरण के लिए अत्यंत श्रेयस्कर है।

गीताशास्त्रमिदं(म्) पुण्यं(यँ), यः(फ्) पठेत् प्रयतः(फ्) पुमान् |
विष्णोः(फ्) पदमवाप्नोति, भयशोकादिवर्जितः ॥ 3॥

जो मनुष्य शुद्धचित्त होकर प्रेमपूर्वक इस पवित्र गीताशास्त्रका पाठ करता है, वह भय और शोक

आदिसे रहित होकर विष्णुधामको प्राप्त कर लेता है

गीताध्ययनशीलस्य, प्राणायामपरस्य च ।

नैव सन्ति हि पापानि, पूर्वजन्मकृतानि च ॥ 4॥

जो मनुष्य सदा गीताका पाठ करनेवाला है तथा प्राणायाममें तत्पर रहता है, उसके इस जन्म और पूर्वजन्ममें किये हुए समस्त पाप निःसन्देह नष्ट हो जाते हैं

मलनिर्मोचनं(म्) पुं(म्)सां(ञ्), जलस्नानं(न्) दिने दिने ।

सकृद्गीताम्भसि स्नानं(म्), सं(म्)सारमलनाशनम् ॥ 5॥

जलमें प्रतिदिन किया हुआ स्नान मनुष्योंके केवल शारीरिक मलका नाश करता है, परंतु गीताज्ञानरूप जलमें एक बार भी किया हुआ स्नान संसार-मलको नष्ट करनेवाला है

गीता सुगीता कर्तव्या, किमन्यैः(श्) शास्त्रविस्तरैः।

या स्वयं(म्) पद्मनाभस्य, मुखपद्माद्विनिः(स्)सृता ॥ 6॥

जो साक्षात् कमलनाभ भगवान् विष्णुके मुखकमलसे प्रकट हुई है, उस गीताका ही भलीभाँति गान (अर्थसहित स्वाध्याय) करना चाहिये, अन्य शास्त्रोंके विस्तारसे क्या प्रयोजन है

भारतामृतसर्वस्वं(वँ), विष्णोर्वक्त्राद्विनिः(स्)सृतम् ।

गीता गङ्गोदकं(म्) पीत्वा, पुनर्जन्म न विद्यते ॥ 7॥

जो महाभारतका अमृतोपम सार है तथा जो भगवान् श्रीकृष्णके मुखसे प्रकट हुआ है, उस गीतारूप गंगाजलको पी लेनेपर पुनः इस संसारमें जन्म नहीं लेना पड़ता

सर्वोपनिषदो गावो, दोग्धा गोपालनन्दनः ।

पार्थो वत्सः(स्) सुधीर्भोक्ता, दुग्धं(ङ्) गीतामृतं(म्) महत् ॥ 8॥

सम्पूर्ण उपनिषदें गौके समान हैं, गोपालनन्दन श्रीकृष्ण दुहनेवाले हैं, अर्जुन बछड़ा है तथा महान् गीतामृत ही उस गौका दुग्ध है और शुद्ध बुद्धिवाला श्रेष्ठ मनुष्य ही इसका भोक्ता है

भारतामृतसर्वस्व- गीताया मथितस्य च।

सारमुद्धृत्य कृष्णेन, अर्जुनस्य मुखे हुतम् ॥ 9॥

कृष्ण ने महाभारत के अमृत सागर (जिसे पांचवें वेद के रूप में जाना जाता है) का मंथन किया और उसका सार लेकर अर्जुन को भगवद्गीता के रूप में पिलाया।

सर्वशास्त्रमयी गीता, सर्वदेवमयो हरिः।

सर्वतीर्थमयी गंगा, सर्ववेदमयो मनुः ॥10॥

गीता सभी शास्त्रों का सार है। भगवान हरि सभी देवों के निवास स्थान हैं। गंगा सभी पवित्र जलों का सार है और मनुस्मृति वेदों का सारांश है

गीता गंगा च गायत्री, गोविंदेति हृदि स्थिते।

चतुर्गकारसंयुक्ते , पुनर्जन्म न विद्यते ॥ 11॥

जिसके हृदय में गीता, गंगा,गायत्री और गोविंद ये चार 'ग' कार स्थित हैं, उसका पुनर्जन्म नहीं होता।

नमोऽस्तु ते व्यास विशालबुद्धे-

फुल्लारविन्दायतपत्रनेत्र ।

येन त्वया भारततैलपूर्णः(फ्)-

प्रज्वालितो ज्ञानमयः(फ्) प्रदीपः ॥ 12॥

हे व्यासदेव, मैं आपके व्यापक और गहन ज्ञान के लिए आपको नमन करता हूँ।आपकी भव्य आँखें पूर्ण रूपसे खिले हुए कमल की पंखुड़ियों जैसी हैं।आपने भारतम् नामक तेल से ज्ञान का दीपक जलाया है।

एकं(म्) शास्त्रं(न्) देवकीपुत्रगीत-

मेको देवो देवकीपुत्र एव ।

एको मन्त्रस्तस्य नामानि यानि

कर्माप्येकं(न्) तस्य देवस्य सेवा ॥ 13॥

देवकीनन्दन भगवान् श्रीकृष्णका कहा हुआ गीताशास्त्र ही एकमात्र उत्तम शास्त्र है, भगवान् देवकीनन्दन ही एकमात्र महान् देवता हैं, उनके नाम ही एकमात्र मन्त्र हैं और उन भगवान्‌की सेवा ही एकमात्र कर्तव्य कर्म है

ॐ पूर्णमदः(फ्) पूर्णमिदं(म्)पूर्णात्पूर्णमुदच्यते

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः(श्)शान्तिः(श्)शान्तिः ॥